तबले के पश्चिमी बाज के दिल्ली घराने का बदलता स्वरूप

"वर्तमान युग में उत्तर भारतीय संगीत में प्रयुक्त होने वाले अनवद्ध वाद्यों में तबले का सर्वोपरि है आज के युग में गायन की सभी विधाओं तन्त्र वाद्यों एवं नृत्य की संगति में तबला ने अपना एक छत्र राज्य स्थापित कर रखा है। संगीत के साथ–साथ सोलो वादन में भी तबला अपना प्रमुख स्थान रखता है। तबला की लोकप्रियता का एक अन्य कारण यह है कि इस वाद्य में कई अनवद्ध वाद्यों के गुण समावेश हैं जैसे – पखावज, ढ़ोलक, जल आदि तबले की परम्परा पिछले लगभग तीन सौ वर्षों से चली आ रही है।"

तबले का आविष्कार दिल्ली के हजरत अमीर खुसरों ने किया तबले का प्रयोग संगत या एकल वादन दोनों के लिए ही समान रूप से किया जाता है। प्राचीन काल से तबला वाद्य का प्रयोग केवल संगत के लिए ही किया जाता था परन्तु शनैः शनैः समय परिवर्तित हुआ। घरानों में विभाजित और एकल वादन के लिए भी तबले का प्रयोग किया जाने लगा।

"बाज शब्द घरानों के साथ अभिन्न रूप से जुड़ा है घरानों के निर्माण में बाज की केन्द्रीय भूमिका होती है। श्री विजय शंकर मिश्र के अनुसार बाज शब्द वस्तुतः वाद्य का अपभ्रंश है। किन्तु आधुनिक युग में इसका प्रयोग वादन शैली के अर्थ में होता है।" बाज को चार भागों में विभाजित किया गया है। बन्द बाज, खोला बाज, पश्चिमी बाज, पूर्वी बाज।

बन्द बाज – हम बाज में चांटी अर्थात् किनार का अधिक प्रयोग किया जाता है। अतः इसे किनार का बाज भी कहा जाता है। इस बाज में दो अंगुलियों का अधिक प्रयोग किया जाता है। दिल्ली और अजराडा घराने की वादन शैलियाँ बन्द बाज की होती है।

खुला बाज – खुला बाज पखावज का बाज समझा जाता है। इस बात में अंगुलियों के साथ पूरे पंजे का प्रयोग किया जाता है। इस बाज में धिर–धिर जैसे बोलों का अधिक विशेष चलन है और थाप का भी खुला प्रयोग होता है इसका प्रचलन लखनऊ फर्रूखाबाद बनारस घरानों में होता है।

पश्चिमी बाज – इस बाज के अन्तर्गत दिल्ली और अजराडा के घराने की वादन शैली आती है। दिल्ली और अजराडा में किनार या चांटी का प्रयोग होने एवं तर्जनी एवं मध्यम दो अंगुलियों का प्रयोग वादन में अधिक होने के कारण दोनों घराने पश्चिमी घराने के अन्तर्गत आते हैं।

पूर्वी बाज – इसके अन्तर्गत लखनऊ फर्रूखाबाद और बनारस घरानों की वादन शैली आती है। इस बाज में जोरदार बोलों का अधिक प्रयोग किया जाता है। इन्हीं बोलों के प्रयोग के कारण घरानों को पूर्वी बाज के घरानों में रखा जाता है। देश की पूर्वी भाग में होने के कारा भी इन घरानों को पूरब बाज के नाम से सम्बोधित किया जाता है।

इन दानों बाज को मिलाकर पाँच घरानों का जन्म हुआ है दिल्ली, अजराडा, लखनऊ, फर्रूखाबाद, बनारस इत्यादि इन सभी घरानों में से पश्चिमी बाज का दिल्ली घराना बहुत ही मशहूर है। पश्चिमी बाज के दिल्ली घराने की स्थापना उस्ताद सिद्धार खाँ ने की। उस्ताद सिद्धार खाँ दिल्ली के निवासी थे। अतः इनका दिल्ली या दिल्ली घराना कहलाया जो काम पखावज से पंजे से किया जाता है वह इस बाज को अंगुलियों के द्वारा किये जाने लगा बोलों में भी आवश्यकतानुसार परिवर्तन कर लिया गया।

तबले का दिल्ली घराना और गुरू शिष्य परम्परा

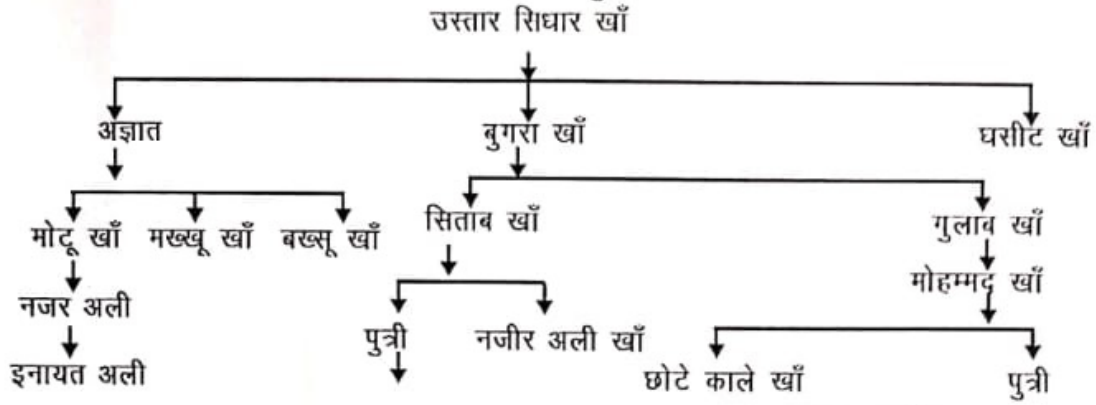

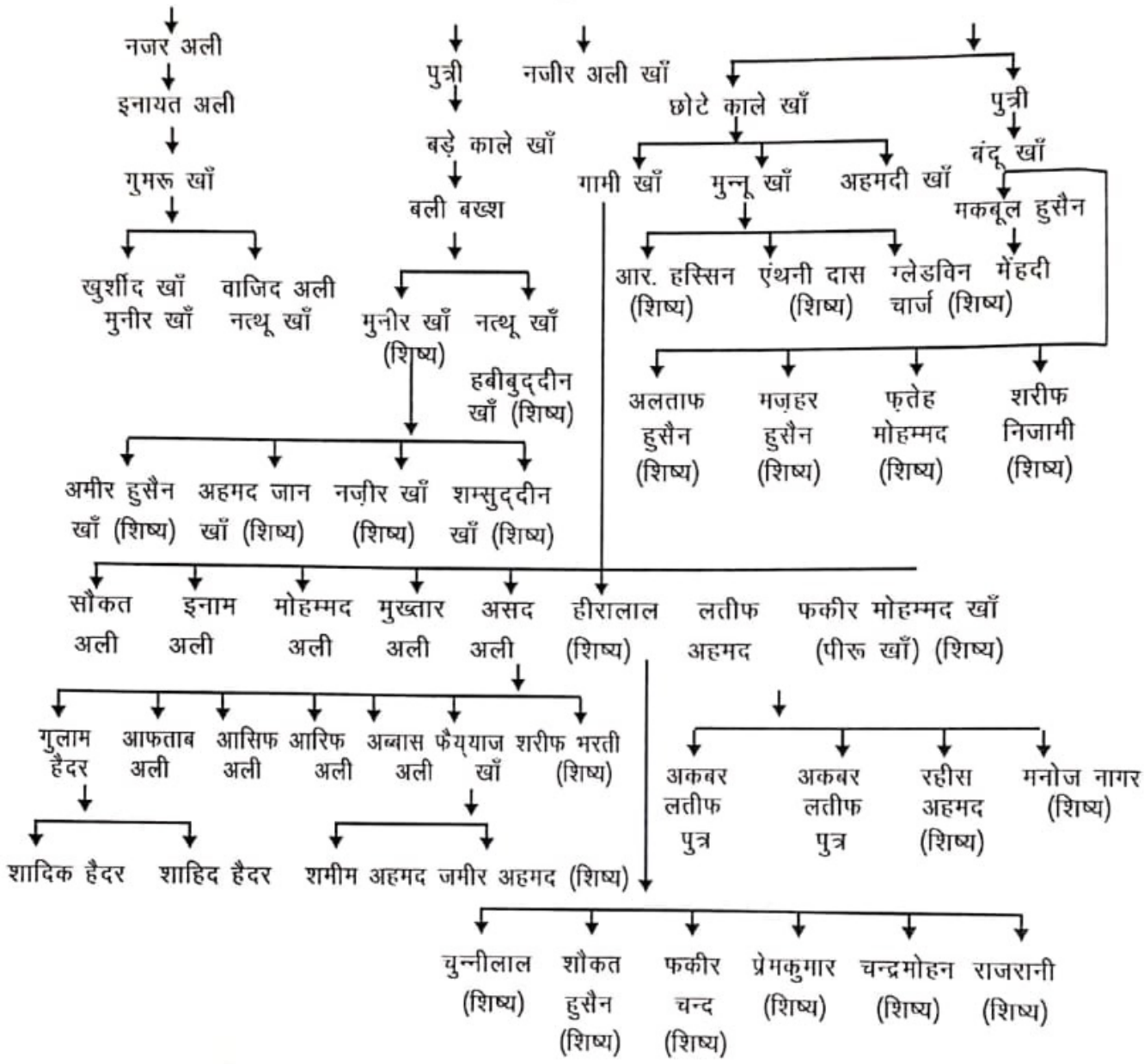

पश्चिमी बाज के दिल्ली घराने की प्रमुख प्रवृतियाँ

हाथों तथा भिन्न–भिन्न अगुँलियों के प्रयोग से तबले पर जो विभिन्न वर्णों को बजाया जाता है। उसे बाज कहते हैं दिल्ली घराने की तबला वादन– शैली निजी एवं मूल रूप से दिल्ली में विकसित हुई। इसीलिए इसे दिल्ली बाज के नाम से जाना जाता है। "दिल्ली घराना तबले का आदि घराना है। तबला का सर्वप्रथम घराना होने का श्रेय प्राप्त होने का कारण दिल्ली घराना अपनी निजी एवं मौलिक विशेषताओं के कारण तबले के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इस घराने में सर्वप्रथम पेशकार, कायदा, कायदा पेराकार, कायदा रेला, रेला मुखड़ा, मोहरा एवं छोटे–छोटे टुकड़े, जगत, त्रिकोणीयगत लग्गी, लड़ी विशेष रूप से बजाए जाते हैं। इन विभिन्न प्रकार के बन्दिशों से बजाए जाते हैं। इन विभिन्न प्रकार के बन्दिशों का समावेश दिल्ली बाज में चार चाँद लगा देते हैं।"

पेशकार

स्वतन्त्र तबला वादन (सोलो) को प्रारम्भ करने के लिए सर्वप्रथम पेशकार को बजाया जाता है पेशकार को मध्यलय में बजाकर नगमा दे रहे संगतकर्ता को अपनी लय समझाई जाती है। दिल्ली घराने के विद्वान ही पेशकार का शुद्ध प्रयोग कर पाते हैं। उदाहरण के लिए दिल्ली बाज का तीन ताल में पेशकार –

"धिंक्र धिंता धा धिंता । धाती धाती धाधा धिंता
X 2
तिंक्र तिंता ता तिंता । धाती धाती धाधा धिंता।"
0 3

कायदा

दिल्ली बाज में पेशकार बजाने के पश्चात् कायदा बजाने की परम्परा मानी जाती है। कायदे को पहले मध्य लय में उठाकर फिर धीरे–धीरे लय को बढ़ाया जाता है। एक बार लय बढ़ जाये तो फिर चाहे कितनी ही लय में इसे बजाया जा सकता है। उदाहरण के लिए तीन ताल में दिल्ली घराने का प्रसिद्ध कायदा

"धागे तिरकिट धागे तिरकिट । धागे तिरकिट तिना किना
X 2
ताके तिरकिट ताके तिरकिट । धागे तिरकिट धिना गिना।"
0 3

रेला

रेला जैसा कि हमें नाम से ही स्पष्ट हो रहा है कि तबला वादन की वह रचना जो रेल गाड़ी की तरह आते तीव्र गति में एंव डगमगाती हुई चले रेला कहलाती है। रेला प्रदर्शन में हाथ की सफाई सौन्दर्य एवं निरन्तरता का जितना ध्यान रखा जाए उतना ही रेला वादन चमत्कारी एवं प्रभावशाली होता है।

उदाहरण के लिए दिल्ली घराने का रेला

"धाती धाडतिर किटतक धाती । धाडतिर किटतक धाडतिर किटतक
X 2
ताती ताडतिर किटतक ताती । धाडतिर किटतक धाडतिर किटतक।"
0 3

गत

गत यह स्वतन्त्र तबला वादन का एक विशिष्ट प्रकार है। वादन शैली के अनुरूप मुलायम बोलों की ऐसी रचना जो तिहाई रहित होती है उसे गत कहते हैं। दिल्ली घराने की त्रिकोण गत की बंदिश इस प्रकार है। इस गत के बोल इस प्रकार रखे जाते हैं कि देखने से यह प्रतीत होता है कि मानो कोई त्रिकोण वस्तु रख दी हो इसे त्रिकोण गत कहते हैं।

उदाहरण के लिए तीन ताल की त्रिकोण की बंदिश –

नगिन तेटे तेटे धिन धे धे नग ननना
ना तेटे तेटे धागेना तीना कता ना
ना तीनक तीनक नाती ना
ना धिनक धिनक धेना
ना ना धे धे नगेना
ना धेना धेना
ना ना धे
ना"

प्राचीनकाल में पश्चिमी बाज के दिल्ली घराने में चक्रदार फरमाइशी चक्रदार कमाली चक्रदार लग्गी लड़ी आदि का प्रयोग नहीं किया जाता था। क्योंकि इन रचनाओं का प्रयोग पूर्ण रूप पूर्वी बाज के घरानों में किया जाता है। परन्तु आधुनिक काल में इन सभी रचनाओं का प्रयोग दिल्ली घराने में किया जाने लगा है। परन्तु दिल्ली बाज में ये सब रचनाएँ दिल्ली घराने के बोल समूह व दो अँगुलियों के प्रयोग से ही बजाया जाता है। उदाहरण के लिए पश्चिमी बाज के दिल्ली घरान में तीन ताल की लग्गी–

"धाती घेना धाती घेना । धाती धागे तिना केरा
X 2
ताती केना ताती केना । धाती धागे धिना गिन।"
0 3

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ. श्रीवास्तव, सुनीता – तबला वादन कला की तकनीकी एवं सौन्दर्य पक्ष, अनुभव पब्लिशिंग हाऊस, 618/95/38, सर्वोदय नगर अल्लापुर, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण–2011, पृ.सं. 42
2. वही, पृ.सं. 173
3. तबले के प्रमुख घराने वादन शैलियाँ एवं बंदिशे – डॉ. सुदर्शन राम, पृ.सं.40
4. तबले के प्रमुख घराने वादन शैलियाँ एवं बंदिशे – डॉ. सुदर्शन राम, पृ.सं. 48
5. वही, पृ.सं.58
6. ताल मार्तण्ड – सत्यनारायण वशिष्ठ, पृ.सं. 45
7. वही, पृ.सं. 47
8. ताल शास्त्र का सैद्धान्तिक पक्ष – गुप्ता निशी, पृ.सं. 135
9. तबले के प्रमुख घराने वादन शैलियाँ एवं बंदिशे – डॉ. सुदर्शन राम, पृ.सं.68

अनुजा
संगीत विद्यार्थी
वनस्थली विद्यापीठ (राज.)

प्रो. शर्मिला टेलर
शोधा निर्देशिका
वनस्थली विद्यापीठ (राज.)